Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 GISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में काव्यशास्त्रगतौचित्य विमर्श

अपर्णेश कुमार शुक्ल
शोधच्छात्र
संस्कृत विभाग
नेहरू महाविद्यालय ललितपुर
सम्बद्ध–बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय
झाँसी

शोध आलेख सार – संस्कृत साहित्य में प्राचीनकाल से ही काव्य का एक सर्वमान्य एवं सर्वथा निर्दुष्ट लक्षण निर्धारण हेतु आचार्यों ने प्रयास किया है। काव्य–प्रयोजन, काव्य–हेतु इत्यादि विषयों पर भी विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। काव्य समीक्षा की दृष्टि से रस, रीति, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य ये छः सम्प्रदाय महत्वपूर्ण माने गये हैं। सहृदयों के हृदय में प्रसुप्त शोक नामक स्थायी भाव को जागृत कर करुण रस को सर्वतोभावेन निष्पन्न कर रहा है।

मुख्य शब्द – संस्कृत, साहित्य, औचित्य, गद्य, पद्य, नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पूकाव्य, काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र।

काव्य की परिधि में गद्य, पद्य, नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, चम्पूकाव्य आदि समस्त हृदयवर्जक रचनायें समाहित होती हैं, इनकी समीक्षा, विवेचना अथवा समालोचना पद्धति को ही काव्यशास्त्र, साहित्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र अथवा आलोचनाशास्त्र के नाम से जाना जाता है। रमणीय कृतियों का गुण, अलंकार, रस, छन्द, रीति एवं ध्वनि आदि तत्त्वों की दृष्टि से अध्ययन, अनुशीलन एवं विवेचन ही काव्यशास्त्र का विषय है।

संस्कृत साहित्य में प्राचीनकाल से ही काव्य का एक सर्वमान्य एवं सर्वथा निर्दुष्ट लक्षण निर्धारण हेतु आचार्यों ने प्रयास किया है। काव्य–प्रयोजन, काव्य–हेतु इत्यादि विषयों पर भी विद्वानों में मतभेद पाया जाता है। काव्य समीक्षा की दृष्टि से रस, रीति, अलंकार, ध्वनि, वक्रोक्ति एवं औचित्य ये छः सम्प्रदाय महत्वपूर्ण माने गये हैं। इन विषयों पर मतभेद होते हुए भी प्रायः सभी आचार्य रस, गुण अलंकर, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति तथा औचित्य का महत्व स्वीकार करते हुए इन्हें काव्यशास्त्र का उपकारक मानते है।

आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा निरूपित औचित्य के सत्ताईस भेदों[1] में गुण, अलंकार एवं रसगत औचित्य काव्यशास्त्र–सम्बद्ध औचित्य के अन्तर्गत परिगणित है। प्रस्तुत लेख में महाकवि भास विरचित रामायणाश्रित रूपकों का गुणौचित्य, अलंकारौचित्य, एवं रसौचित्य की दृष्टि से निदर्शन स्वरूप सोदाहरण एवं ससमन्वय विवेचन प्रस्तुत है।

गुणौचित्य–

आचार्य क्षेमेन्द्र ने गुणौचित्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए लिखा है कि–

प्रस्तुतार्थोचितः काव्ये भव्यः सौभाग्यवान्गुणः।
स्यन्दतीन्दुरिवानन्दंसंभोगावसरोदितः।।[2]

प्रस्तुत अर्थ के अनुरूप ही ओज, प्रसाद आदि गुण काव्य में सुन्दर तथा अपने अर्थ प्रतिपादन रूप कर्तव्य में निपुण होते हैं और वे उसी तरह आनन्ददायक होते हैं जैसे कान्तासंगम के समय नवोदित चन्द्रमा।

उदाहरण–

हारो जलार्द्रवसनं नलिनीदलानि
प्रालेयशीकरमुचस्तुहिनांशुभासः।
यस्येन्धनानि सरसानि च चन्दनानि
निर्वाणमेष्यति कथं स मनोभवाग्निः।।[3]

पुष्प अथवा मुक्ता की माला, भीगा वस्त्र, कमलिनी के पत्ते, बर्फ की बूँदों को टपकाने वाले चन्द्रमा की किरणें तथा सरस चन्दनद्रव आदि जिस (कामाग्नि) के लिए ईंधन का काम कर रहे हैं, वह कामाग्नि भला कैसे बुझ सकती है।

यहाँ विरहविधुरा कादम्बरी की विरहव्यथा का वर्णन सौकुमार्य आदि समुचित गुणों के सहयोग से अत्यन्त औचित्यपूर्ण प्रतीत हो रहा है।

महाकवि भास ने अवसरानुकूल प्रायः सभी गुणों का प्रयोग किया है। **अभिषेक नाटक** में वीर एवं करुण का प्राधान्य होने से ओजगुण का बाहुल्य है। एक उदाहरण–

एते पादपशैलभग्नशिरसो मुष्टिप्रहारैर्हता,
क्रुध्दैर्वानरयूथपैरतिबलैरूत्पुच्छकर्णैर्वृताः।
कण्ठग्राहविवृत्ततुङ्गनयनैर्दंष्ट्रोष्ठतीव्रैर्मुखैः
शैला वज्रहता इवाशु समरे रक्षोगणाः पातिताः।।[4]

ये वृक्षों तथा पर्वतों द्वारा फोड़े गये शिरों वाले, मुष्टिकाप्रहार द्वारा मारे गये, क्रोधित तथा महाबलशाली और पूँछ तथा कान के ऊपर किए हुए वानर–गण के नेताओं द्वारा घिरे हुए, गला दबा देने से उल्टी तथा बाहर निकली हुई आँखों वाले तथा दाँतों से कटे हुए ओठ के कारण भयंकर मुख वाले राक्षसों का समूह (इन्द्र द्वारा) वज्र से मारे गये पर्वत के समान युद्ध में शीघ्र (मार कर) गिरा दिये गये हैं।

महाकवि भास ने राम–रावण के युद्ध का वर्णन षष्ठ अंक के प्रारम्भ में तीन विद्याधरों से करवाया है। उपर्युक्त श्लोक में द्वितीय विद्याधर द्वारा युद्धभूमि में घायल वानरों एवं मृत राक्षसों का वर्णन ओजपूर्ण शैली में किया गया है। विषयानुकूल वीर रस, दीर्घ समास, परुष वर्ण, ऊपर–नीचे रेफ से युक्त ओजगुण युद्ध की भीषणता को और अधिक बढ़ा रहे हैं।

इसी प्रकार **प्रतिमानाटक** में लक्ष्मण ओजपूर्ण गर्जना करते हुए कहते हैं कि–

यदि न सहसे राज्ञो मोहं धनुः स्पृश मा दया
स्वजननिभृतः सर्वोऽप्येवं मृदुः परिभूयते।
अथ न रूचितं मुञ्च त्वं मामहं कृतनिश्चयो।
युवतिरहितं लोकं कर्तुं यतश्छलिता वयम्।।[5]

यदि महाराज का इस प्रकार मूर्च्छित होना आपकी सहनशीलता के बाहर है तो इस कारण का प्रतिकार करने के लिए धनुष उठाइये, उस पर दया किस लिये? स्वजनों के विषय में चुप रह कर सहन करने वाला तथा कोमल स्वभाववाला पुरुष इसी प्रकार तिरस्कृत होता है। किन्तु यदि आप स्वयं प्रतीकार नहीं करना चाहते तो मुझे

आज्ञा दीजिये। मैंने इस लोक को युवतियों से शून्य करने का निश्चय कर लिया है, क्योंकि युवती के कारण ही हम लोग आज छले जा रहे हैं।

कञ्चुकी के मुख से महाराज दशरथ के मूर्च्छित होने का समाचार सुनकर यह लक्ष्मण का श्रीराम के प्रति कथन है। यहाँ उद्धत पराक्रमी योद्धा लक्ष्मण का वक्तव्य उनके तेजस्वी प्रताप के अनुरूप ओज गुण से परिपूर्ण है।

अलंकारौचित्य–

अलंकारौचित्य को स्पष्ट करते हुए क्षेमेन्द्र कहते हैं–

अर्थौचित्यवता सूक्तिरलंकारेण शोभते।
पीनस्तनस्थितेनेव हारेण हरिणेक्षणा।।[6]

स्थूल एवं उन्नत पयोधरों के मध्य स्थित हार से मृगनयनी की जैसी शोभा होती है वैसी ही शोभा से अर्थगत औचित्य से संवलित अलंकार से कवि के सुन्दर वचन सुशोभित होते हैं।

वत्सराज उदयन की कामदेव के साथ की गयी तुलना शृंगार रस के अनुरूप होने के कारण सहृदयों के हृदय को चमत्कृत करते हुए अलंकारौचित्य को प्रकट करते हुए उदाहरण के रूप में क्षेमेन्द्र प्रस्तुत करते हैं कि–

विश्रान्तविग्रहकथो रतिमाञ्जनस्य
चित्ते वसन् प्रियवसन्तक एव साक्षात्।
पर्युत्सुको निजमहोत्सवदर्शनाय
वत्सेश्वर कुसुमचाप इवाभ्युपैति।।[7]

महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपकों में अलंकारौचित्य का सौन्दर्य भी सर्वथा दर्शनीय है। **अभिषेक नाटक** के चतुर्थ अंक में–

सजलजलदसन्निभप्रकाशः
कनकमयामलभूषणोज्ज्वलाङ्गः।
अभिपतति कुतो न राक्षसोऽसौ
शलभ इवाशु हुताशनं प्रवेष्टुम्।।[8]

जलपूर्ण मेघ के समान कान्तिवाला तथा स्वर्णाभूषणों से भूषित यह राक्षस आकाश से क्यों उतर रहा है? यह राक्षस तो आग में प्रवेश करने को उद्यत शलभ के सदृश मालूम पड़ता है।

अलंकारौचित्य के उदाहरण तो **प्रतिमानाटक** में प्रति पग पर दृष्टिगोचर होते हैं। इनकी उपमाओं का उत्स जीवन के अत्यन्त निकट है। रामवनगमन का प्रस्तुत चित्र दर्शनीय है–

''सूर्य इव गतो रामः, सूर्य दिवस इव लक्ष्मणोऽनुगतः।
सूर्यदिवसावसाने छायेव न दृश्यते सीता।।[9]

अर्थात् सूर्य के समान राम चले गये। सूर्यानुगामी दिन की तरह लक्ष्मण भी अदृश्य हो गये। सूर्य और दिन के अन्तर्निहित होने पर छाया के समान सीता भी नहीं दिखाई पड़ती हैं।

इन समस्त उपमाओं में औचित्य का जो पुट स्फुरित हो रहा है, उसकी चारुता, मनोहरता, रमणीयता एवं चित्ताकर्षकता सहृदयजनसंवेद्य हैं।

रसौचित्य–

रसौचित्य के स्पष्ट करते हुए क्षेमेन्द्र कहते हैं कि–

कुर्वन्सर्वाशये व्याप्तिमौचित्यरूचिरो रसः।
मधुमास इवाशोकं करोत्यङ्कुरितं मनः।।[10]

अर्थात् सभी सहृदयों के हृदय में अपनी व्यापकता को बनाता हुआ, औचित्य के कारण मनोहर श्रृंगार आदि रस मन को उसी तरह विकसित कर देता है जैसे वसन्त ऋतु अशोक को प्रफुल्लित कर देता है। रसौचित्य को स्पष्ट करते हुए आचार्य क्षेमेन्द्र ने श्रीहर्ष विरचित रत्नावली का एक पद्य उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत किया है–

उद्दामोत्कलिकां विपाण्डुररुचं प्रारब्धजृम्भां क्षणा–
दायासं श्वसनोद्गमैरविरलैरातन्वतीमात्मनः।
अद्योद्यानलतामिमां समदनां नारीमिवान्यां ध्रुवं
पश्यन्कोपविपाटलद्युति मुखं देव्याः करिष्याम्यहम्।।[11]

क्षण भर में ही पर्याप्त कलियों से आच्छादित, विकसित होने वाली, श्वेतकान्ति वाली, निरन्तर हवा के झकोरों से हिलने के कारण अपनी दुर्बलता प्रकट करती हुई, मदन नामक वृक्ष से लिपटी हुई उद्यान की उस लता की कामवेग के कारण रोमांचित, जम्भाई लेने वाली, सफेद शरीर की कान्तिवाली, निरन्तर उच्छवासों से अपनी व्यथा को व्यक्त करती हुई किसी अन्य स्त्री के समान देखता हुआ मैं आज निश्चय ही महारानी के मुख को कोप के कारण किचिंत् लाल वर्ण का कर दूँगा।

उपर्युक्त श्लोक में वासवदत्ता में दिखाई पड़ने वाले ईर्ष्या विप्रलम्भ रूप श्रृंगार रस की, मनोहर कामिनी से समानता के कारण नवीन मालिका नामक लता में विरह दशा का आरोप होने से रसौचित्य स्वतः स्पष्ट है।

महाकवि भास के रामायणाश्रित रूपक **अभिषेक नाटक** में वियोग श्रृंगार के रसौचित्य का भाव स्पष्ट है कि–

अनशनपरितप्तं पाण्डु स क्षामवक्त्रं
तव वरगुणचिन्तावीतलावण्यलीलम्।
वहति विगतधैर्यं हीयमानं शरीरं
मनसिजशरदग्धं बाष्पपर्याकुलाक्षम्।।12

वे राम अनाहार के कारण सन्तप, पीत वर्ण वाले, सूखे मुख वाले, आपके श्रेष्ठ गुणों का चिन्तन करने के कारण सौन्दर्य और विलास से रहित, कामदेव के बाणों से जले हुए धैर्य–रहित, अश्रुपूर्ण आँखों वाले दुर्बल शरीर को धारण कर रहे हैं।

यहाँ पर श्रीराम का कान्तिहीन वदन तथा अनङ्ग के बाणों से जलाये जाना आदि सहृदयों के हृदय में भी विरहजन्य वेदना का समुत्पादक होने के कारण रसौचित्य की कसौटी पर उपयुक्त प्रतीत होता है।

इसी प्रकार **प्रतिमानाटक** में रामवनगमन के पश्चात् अयोध्या के दृश्य में करुण रसाभिव्यक्त के रूप में कञ्चुकी कहता है कि–

नागेन्द्रा यवसाभिलाषविमुखाः सास्रेक्षणा वाजिनो
ह्रेषाशून्यमुखाः सवृध्दवनिताबालाश्च पौरा जनाः।
त्यक्ताहारकथाः सुदीनवनदनाः क्रन्दन्त उच्चैर्दिशा
रामो याति यया सदारसहजस्तामेव पश्यन्त्यमी।।[13]

हाथियों ने घास खाना तो दूर उसकी अभिलाषा भी त्याग दी। घोड़ों की आँखे आँसू से डबडबा रही है, जिससे उन्होंने हिनहिनाना छोड़ दिया है। नगरवासी बूढ़े, जवान, औरत और बच्चे तक भी भोजन भूल गये हैं, जिससे सभी के चेहरे उतर गये हैं। सभी जोर–जोर से चिल्ला कर विलाप कर रहे हैं। अधिक क्या कहें ये सभी लक्ष्मण और सीता के साथ राम जिस ओर गये हैं, उधर ही आँखे लगाये देख रहे हैं।

उपर्युक्त स्थिति में सहृदयों के हृदय में प्रसुप्त शोक नामक स्थायी भाव को जागृत कर करुण रस को सर्वतोभावेन निष्पन्न कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पदे वाक्ये प्रबन्धार्थे गुणेऽलंकरणे रसे।
   क्रियायां कारके लिङ्गे वचने च विशेषणे।
   उपसर्गे निपाते च काले देशे कुले व्रते।
   तत्त्वे सत्त्वेऽप्यभिप्राये स्वभावे सारसङ्ग्रहे।।
   प्रतिभायामवस्थायां विचारे नाम्न्यथाशिषि।
   काव्यस्याङ्गेषु च प्राहुरौचित्यं व्यापि जीवितम्।। औचित्यविचारचर्चा–8–10
2. औचित्यविचारचर्चा–14
3. औचित्यविचारचर्चा–14 का उदाहरण
4. अभिषेकनाटक–6–3
5. प्रतिमानाटक–1–18
6. औचित्यविचारचर्चा–15
7. औचित्यविचारचर्चा–15 का उदाहरण
8. अभिषेक नाटक–4–5
9. प्रतिमानाटक–2–7
10. औचित्यविचारचर्चा––16
11. औचित्यविचारचर्चा 16 का उदाहरण
12. अभिषेकनाटक–2–21
13. प्रतिमानाटक–2–2